पोषण पखवाड़ा 2026ः एक पोषण अभियान अब बना ब्रेन मिशनः डॉ. गीता चोपड़ा

भास्कर समाचार सेवा

नई दिल्ली। डॉ. गीता चोपड़ा दिल्ली विश्वविद्यालय में बाल विकास की पूर्व प्रोफेसर हैं, जहां उन्होंने लगभग चार दशकों तक अध्यापन किया। वह समान बचपन की संस्थापक भी हैं। वह राष्ट्रीय ईसीसीई पाठ्यक्रम, नवचेतना और आधारशिला की विशेषज्ञ समिति की सदस्य रही हैं और Disability Screening Schedule की लेखिका हैं उनका कहना है हर साल भारत पोषण पखवाड़ा मनाता है, जो उद्देश्य पोषण 2.0 के तहत चलाया जाने वाला 15 दिनों का देशव्यापी अभियान है। यह अभियान बाल पोषण के लिए 14 लाख से अधिक आंगनवाड़ी केंद्रों को सक्रिय करता है। 2018 से अब तक, इस अभियान के तहत 150 करोड़ से अधिक जागरूकता गतिविधियां आयोजित की जा चुकी हैं। पिछले सात संस्करणों में इसकी भाषा एक जैसी रही है—पूरक पोषण, टीकाकरण, स्तनपान और वृद्धि की विज्ञान इस बात को स्पष्ट रूप से साबित करता है। जीवन के शुरूआती कुछ वर्षों में हर सेकंड दस लाख से अधिक न्यूरल कनेक्शन बनते हैं। छह साल की उम्र तक मस्तिष्क अपने वयस्क आकार का लगभग 95% तक पहुंच जाता है। लेकिन यह विकास अपने आप नहीं होता—यह पोषण, मानसिक उत्तेजना और सबसे महत्वपूर्ण, संवेदनशील देखभाल रेस्पॉन्सिव केयरगिविंग से प्रभावित होता है। भारत इस समझ पर काम करने के लिए विशेष रूप से सक्षम स्थिति में है। एकीकृत बाल विकास सेवाएं, जो दुनिया के सबसे बड़े प्रारंभिक बचपन कार्यक्रमों में से एक है, पहले से ही लगभग 9 करोड़ लाभार्थियों तक पहुंच रहा है। नवचेतना और आधारशिला जैसे नए ढांचे अब सिस्टम में शुरूआती मानसिक विकास और स्कूल के लिए तैयारी को और मजबूती से शामिल कर रहे हैं। सकारात्मक रूप से, जमीनी स्तर पर ऐसे मॉडल दिखने लगे हैं जो इस एकीकृत दृष्टिकोण को वास्तविक रूप देते हैं। नंद घर जैसी पहलें, जिन्हें अनिल अग्रवाल फाउंडेशन का समर्थन प्राप्त है, आंगनवाड़ी केंद्रों को आधुनिक केंद्रों के रूप में विकसित कर रही हैं, जहां पोषण, प्रारंभिक शिक्षा और सामुदायिक भागीदारी को एक ही जगह पर जोड़ा जाता है। इसी तरह विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे प्रयास यह दिखाते हैं कि साझेदारियों के माध्यम से सार्वजनिक प्रणालियों को कैसे मजबूत किया जा सकता है—खासकर वहां, जहां इसकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है, यानी अंतिम स्तर लास्ट माइल पर नवाचार को लागू करके। इस बदलाव के केंद्र में भारत के फ्रंटलाइन वर्कर्स हैं। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और आशा कार्यकर्ता पहले से ही एक ही परिवारों तक पहुंचते हैं, लेकिन उनके बीच तालमेल का पूरा उपयोग अभी नहीं हो पाया है। यदि उन्हें एक जैसी ट्रेनिंग दी जाए और शुरूआती मस्तिष्क विकास पर साझा ध्यान केंद्रित किया जाए, तो वे मिलकर एक मजबूत सहयोगी प्रणाली बन सकते हैं, जो मातृ स्वास्थ्य, पोषण और शुरूआती शिक्षा को एक निरंतर देखभाल प्रणाली कॉन्टिन्यूअम ऑफ केयर के रूप में जोड़ती है। हालांकि, कुछ महत्वपूर्ण कमियां अभी भी बनी हुई हैं। विकास में देरी और विकलांगताओं की शुरूआती पहचान अभी सीमित है, जबकि यही समय मस्तिष्क के सबसे अधिक विकास न्यूरोप्लास्टिसिटी का होता है। इस अंतर को पाटना बहुत जरूरी है—केवल समावेशन के लिए ही नहीं, बल्कि भारत की भविष्य की कार्यबल की पूरी क्षमता को सुरक्षित रखने के लिए भी। आर्थिक दृष्टिकोण भी इस आवश्यकता को और मजबूत करता है। जेम्स हेक्मैन के शोध के अनुसार, शुरूआती बचपन में किया गया निवेश सार्वजनिक नीतियों में सबसे अधिक लाभ देने वाले निवेशों में से एक है। सीधे शब्दों में कहें तो, जीवन के पहले छह वर्षों में जो विकास होता है, उसकी पूरी भरपाई बाद में संभव नहीं होती। पोषण पखवाड़ा 2026 ने दिशा तय कर दी है। अब जरूरत है इस इरादे को जमीन पर उतारने की—फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं की क्षमता को मजबूत करने, सेवाओं को बेहतर तरीके से जोड़ने और जीवन के शुरूआती वर्षों, खासकर 0-3 आयु वर्ग के वंचित बच्चों को प्राथमिकता देने की।